निराला' साहित्य के उत्कृष्टताएँ

Nirala Sahitya Ke Utkrushtatayen

***Dr.Manjushree Menon, Associate Professor of Hindi, M.E.S.College of Arts, Commerce and Science, Bangalore.**

भूमिका:-

सूर्यकांत त्रिपाठी निराला जी हिंदी के एक स्वनामधन्य कवि थे। वे कविता के रचयिता मात्र नहीं ,स्वयं एक विराट महाकाव्य के नायक बनकर जिए और इतिहास बनकर उन्होंने अपनी जीवनलीला समाप्त की। निराला की तरह विलक्षण ,क्रांतिकारी व्रजदापी कठोर तथा कुसुमों से मृदुल साहित्यकार हिंदी साहित्य व भाषा के इतिहास में यदा - कदा आया करता है। ऐसा लगता है कि किसी विशिष्ट व्यकित्व को मापने के जितने भी पैमाने हैं ,वे सब निराला के सामने पहुँचकर स्तब्ध रह गए हों। इस दृष्टि से उनका उपनाम निराला उनके व्यक्तित्व का सबसे सही और समर्थ परिचायक है।

निरालाजी छायावादी कवियों में सबसे अधिक विद्रोही ,सर्वाधिक उदात्त ,जन - जीवन के प्रति सबसे अधिक संवेदनशील तथा जागरूक कवि रहे हैं। आधुनिक चेतना के विद्रोही स्वरों की सबसे अधिक और सर्वाधिक समर्थ अभिव्यक्ति निराला के काव्य में हैं। बंगाल में जन्म लेने के कारण उन्होंने आधुनिक चेतना से संपृक्त साहित्य का अध्ययन और अनुशीलन किया था। स्वामी रामकृष्ण परमहंस ,स्वामी विवेकानंद ,रविन्द्रनाथ टैगोर आदि महापुरुषों का प्रभाव आपकी रचनाओं पर स्पष्ट दिखाई पड़ता है। निराला जी ने हिंदी साहित्य क्षेत्र में क्रांतिकारी परिवर्तन करके एक युग प्रवर्तक कवि का काम किया। प्रसाद जी ने जहाँ हिंदी साहित्य की धारा को नया मोड़ दिया ,निराला ने उसमें गोता लगाकर उससे मोती प्राप्त किये। निराला के काव्य में हृदयवाद ,बुद्धिवाद ,दार्शनिकता और कवित्व का पुट एक साथ ही विद्यमान है। निराला का विद्रोही स्वर समाज ,साहित्य ,धर्म और नैतिकता सभी स्तरों पर मुखरित हुआ है। निराला हिंदी के सर्वाधिक प्रगतिशील और निराले कवि हैं। उनके व्यक्तित्व में जहाँ एक ओर विरोधों का समन्यव है ,वहीँ दूसरी ओर उनके काव्य में ठीक इसका विरोधाभास है।

काव्य का विद्रोही स्वर

प्रचंड व्यक्तित्व के कारण निराला कहीं भी किसी भी क्षेत्र में दबना नहीं जानते थे। वाणी का तेज़ और मुखर विद्रोह उनके काव्य का प्राण है। निराला जी ने सामाजिक कुरूतियों पर बड़ा तीखा व्यंग किया हुआ है। वे समाज के अंधविश्वास ,ढोंग और पाखण्ड के कट्टर विरोधी थे। उन्होंने विधवा के जीवन का कितना मार्मिक चित्रण प्रस्तुत किया है -

वह इष्ट देव के मंदिर की पूजा-सी,
वह दीप शिखा-सी शांत भाव में लीन

वह टूटे तारों की छूटी लता-सी दीन,
दलित भारत की विधावा है।

भाषा की उन्मुक्तता

निराला जी के काव्य की एक प्रमुख विशेषता उनके काव्य भाषा की उन्मुक्ता भी है ,जिसको लेकर वे छायावादी कविओं में अपना विशिष्ट स्थान बना पाए। कुकुरमुत्ता तक आते - आते वे अपनी इसी भाषा सम्बन्धी उन्मुक्तता के कारण प्रयोगवाद और नयी कविता के सूत्रधार तक कहें जाने लगे। उनकी भाषा में सहज स्वाभाविकता है। वह किसी प्रकार की कृतिमता सहन नहीं कर पाती। पंतजी के समान निराला ने भी खड़ी बोली को बनाया और माँजा है।

निराला की भाषा शैली

निरालाजी की भाषा शुद्ध खड़ीबोली है जो संस्कृत के तत्सम शब्द से पूर्णत संपन्न है। इनकी भाषा पर बंगला भाषा की छाप दिखलाई पड़ती है। भाषा की क्लिष्टता के कारण कविता दुरूह और दुर्बोध हो गयी है। भाव - गाम्भीर्य के कारण भी निराला की भाषा विशेष बोझिल सी हो गयी है। बंगला शब्दों के साथ साथ ही निरालाजी के काव्य में उर्दू ,फ़ारसी और विदेशी शब्दों के भी प्रयोग मिलते हैं। दर्शन ,चिंतन तथा विचार प्रधान रचनाओं में भाषा दुरूह और दुर्बोध हो गयी है ,किन्तु जहाँ ह्रदय - तत्व की प्रधानता है ,वहां भाषा कोमलकांत पदावली से युक्त हो गयी है। भाषा में शब्दों का चयन प्रसंगानुकूल हुआ है। ओज ,प्रसाद और माधुर्य गुणों से युक्त से संपन्न होने के साथ साथ भाषा कोमल ,सरस और प्रवाहपूर्ण है। मुहावरों के प्रयोग से वह और भी जीवंत हो उठी है। इस प्रकार निरालाजी कोमल और दुरूह दोनों प्रकार की भाषा प्रयुक्त करने में पूर्णत सिद्ध हस्त हैं।

निराला की मुक्तक शैली

निरालाजी की मुख्य शैली मुक्तक गीत शैली है। द्विवेदीयुगीन प्रभाव के कारण उन्होंने इतिवृत्तमक कथाशैली का भी प्रयोग किया है। तुलसीदास ,राम की शक्ति पूजा आदि निराला की कथात्मक शैली के नमूने हैं ,जो भावों की प्रधानता के कारण कथात्मक मनोरंजनात्मक से उठकर भावप्रधान हो जाते हैं। निराला के काव्य में श्रृंगार ,हास्य ,वीर ,करुण और रौद्र रस का प्रयोग हुआ है। निराला जी ने छंदों का बंधन कभी नहीं स्वीकार किया। उन्होंने अपनी ओजमयी वाणी से सिद्ध कर दिया कि काव्य के लिए छंद का बंधन व्यर्थ है। उनकी मुक्त छंद की रचनाओं में एक अपना लय है ,अपना सौन्दर्य है।

साहित्य के विभिन्न आयाम

निराला हिंदी काव्य धारा के स्वछंदता वादियों कवियों में अपना विशिष्ट स्थान रखते हैं। उन्होंने स्वच्छंद काव्य लिखकर हिंदी में नयी छंद प्रणाली का आरम्भ किया। आपके काव्य में उच्चकोटि की कलात्मकता और मौलिकता है। निरालाजी छायावादी युग के क्रांतिकारी कवि थे। इन्होने दर्शन और रहस्यवाद ,भक्ति भावना ,प्रकृति प्रेम ,छायावाद

,देश प्रेम ,उपेक्षितों के प्रति दया एवं प्रगतिवाद सम्बन्धी विविध विषयों को अपने काव्य का विषय बनाया तथा हिंदी को मानवतावादी,अद्वैतवादी ,संवेदनवादी साहित्य प्रदान किया। काव्य शिल्प की दृष्टि से निराला आधुनिक हिंदी के कवि गुरु हैं तथा उनका काव्य विद्रोही मानवतावाद का व्याख्यान है।

निराला सर्वहारा वर्ग के हिमायती थे। दीनता, हीनता एवं गरीबी का सर्वाधिक कडवा अनुभव निराला को था। निराला अधिक गंभीर होकर आज के मानव का चित्र खींचते हैं। 'बादल राग' कविता में निराला दीनता हीनता का ही परिचय देते हैं। निराला जी अन्य छायावादी कवियों की अपेक्षा कहीं अधिक विद्रोही एवं स्वच्छन्दता प्रेमी थे। वह तो जीवनभर विद्रोह एवं संघर्ष करते रहे। तोड़ता बन्ध, प्रतिसंघ धरा स्फीति वक्ष दिग्विजय अर्थ प्रतिपल समर्थ बढ़ता समक्ष इस प्रकार निराला का सम्पूर्ण काव्य विद्रोह पीड़ा, संत्रास का काव्य है।

मानवतावाद छायावादी कवियों की प्रमुख विशेषता है। उन्होंने समाज के चित्रों के साथ व्यक्तिगत अनुभूतियों-विचारों तथा उत्कर्ष-अपकर्ष की भी भावनाओं को उजागर किया है। लगभग सभी कवियों में आत्मा की पुकार सुनायी पड़ती है। निराला के काव्य जैसे 'राम की शक्ति पूजा', स्नेह निर्झर बह गया है', 'सरोज स्मृति', जूही की कली' में कवि की वैयक्तिकता समाहित है। छायावादी काव्य में निराशा-दुख सन्ताप करुणा, कष्ट-क्लेष की पर्याप्त विवृत्ति हुई है। वेदना और कष्ट ही कवि के जीवन का सर्वस्व है। निराला की 'स्नेह निर्झर बह गया', 'मैं अकेला मुझे स्नेह क्या मिल सकेगा' आदि कविताएँ निराशा व करुणा का भाव प्रदर्शित करती है।

निराला ने अपने काव्य में देश के सांस्कृतिक पतन की ओर जाने का व्यापकता से संकेत किया है। उनका मत है कि देश के भाग्याकाश को विदेशी शासन के राहु ने अपनी कालिमा से आच्छादित कर रखा हैं। वे चाहते है कि देश का भाग्योदय हो और भारतीय जनता आनन्दविभोर हो उठे। 'भारती-वन्दना', जागो फिर एक बार', छत्रपति शिवाजी का पत्र', आदि कविताएँ निराला जी की देश भक्ति को उजागर करती हैं। उनके मन में भारत के प्रति असीम प्रेम था, भारती वन्दना कविता में उन्होंने यह भाव व्यक्त किया है।

काव्यात्मक विशेषताएँ

भाव पक्ष के भाँति निराला जी का कलापक्ष भी बहुत पुष्ट है। उन्होंने हिन्दी कविता को नवीन बिम्ब और नवीन छन्द प्रदान किए हैं। निराला जी की कलापक्षीय विशेषताएँ निम्न प्रकार हैं-

शैली- जिस प्रकार निराला छन्द मुक्त कवि हैं उसी प्रकार उनकी शैली भी मुक्त है। उनकी काव्य शैली उनकी अपनी जीवन शैली है

सौम्य भाषा- निराला जी की भाषा संस्कृतनिष्ठ है। कोमल कल्पना के प्रयोग के समय उनकी भाषा कोमलकान्त पदावली को हो जाती है। किन्तु पौरुष एवं ओज प्रदर्शन में भाषा में नीरसता नहीं अपितु संगीत की मधुरिमा विद्यमान है। मुहावरे के प्रयोग ने निराला जी की भाषा में नई व्यग्जना-शक्ति भर दी। जहाँ दर्शन, चिन्तन व विचार-तत्व प्रधान हो गया है वहाँ निराला की भाषा दुरुह हो गयी है।

अलंकार प्रयोग - निराला ने अपने काव्य में अलंकारों का प्रयोग आवश्यकतानुसार यथास्थान किया है। निराला ने अलंकारों का प्रयोग चमत्कार प्रदर्शन करने के लिए नहीं किया। अनुप्रास, सांगरुपक, सन्देह, उपमा, उत्प्रेक्षा, यमक

आदि अलंकारों का प्रयोग निराला किया है। छायावादियों का प्रिय अलंकार मानवीकरण है। निराला ने इसका भी प्रयोग पूर्ण रूप से किया है।

छन्दस का उत्कृष्ट प्रयोग - निराला जी अपनी भावनाओं को व्यक्त करने के लिए प्रायः मुक्त छन्द का प्रयोग करते हैं। उनके मुक्त छन्द भी पर्याप्त संगीतात्मकता हैं उनके छन्दों में एक अजीब सा संगीत, लय व गति-यति का दर्शन होता है। यद्यपि छन्द में लयबद्धता नहीं है किन्तु भाव की प्रभावान्विति से संगीत झलकता है। निराला ने नए छन्दों को गढ़ा है।

निष्कर्ष :

इस प्रकार निराला की भाषा में हिंदी के सभी रूपों के दर्शन होते हैं। महाकवि निराला को जब जिस भाव को व्यक्त करने की आवश्यकता होती थी, सरस्वती का वही रूपप उसके समक्ष नाचता-गाता प्रस्तुत होता था। जहाँ एक ओर संस्कृत की तत्समता तथा सामाजिकता से उनकी भाषा दुरूह तथा झिल है वहाँ लोक प्रचलित मुहावरों से युक्त की है जिसमें उनका वास्तविक व्यक्तित्व झांकता है। निराला की भाषा एक आदर्श भाषा है। जिसने हिंदी के परिनिष्ठत रूप के विकास में पर्याप्त योग दिया है। डॉ० द्वारिका प्रसाद सक्सेना के शब्दों में कह सकते हैं कि- "कवि निराला आधुनिक हिंदी भाषा के डिक्टेटर हैं, क्योंकि अपने भावों एवं विचारों के अनुकूल अभिव्यक्ति में सव सफल दिखाई देती है। यह दूसरी बात है कि जहाँ भाषा कवि की गहन अनुभूति के साथ नहीं चल सकी, वहाँ न केवल कवि की अभिव्यक्ति ही विश्रंखल हो गई हैं अपितु भाषा में भी अस्पष्टता आ गई है। किंतु ऐसे स्कूल अधिक नहीं है।

संदर्भ ग्रंथ:-

- निराला की साहित्य साधना तीसरा खण्ड, राम बिलास शर्मा, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, २००९
- हिन्दी साहित्य कोश, भाग-२, सं॰ धीरेन्द्र वर्मा एवं अन्य, ज्ञानमण्डल लिमिटेड, वाराणसी, पुनर्मुद्रित संस्करण-२०११, पृष्ठ-६५१.
- निराला की साहित्य साधना, प्रथम खण्ड (जीवन चरित), रामविलास शर्मा, राजकमल प्रकाशन प्रा॰लि॰, नयी दिल्ली, संस्करण-2002, पृ॰-39-40.
- निराला रचनावली, खण्ड-1, सं॰-नन्दकिशोर नवल, राजकमल प्रकाशन प्रा॰लि॰, नयी दिल्ली, संस्करण-1998, पृ॰-19.
- निराला की साहित्य साधना, प्रथम खण्ड (जीवन चरित), रामविलास शर्मा, राजकमल प्रकाशन प्रा॰लि॰, नयी दिल्ली, संस्करण-2002.